दुनिया से दूरी
बहुत है जरूरी

पार्ट 2



फ़िक्रे आख़िरत

अहले सुन्नत व जमात

मिनजानिब:
रज़वी टीम, इण्डिया

मुसन्निफ
अनवर रज़ा ख़ान अज़हरी

फ़िक्रे आख़िरत

(पार्ट-1)





हम्द व सना

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतको अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया

और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नही ।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो उस नबी के आल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फेहरिस्त

मुसलमानों की हालात और मौजुदा वक्त

आज ये ना पूछो की मुसलमान परेशान क्यों? बल्कि ये पूछो की मुसलमान नाफ़रमान क्यों? नाफ़रमानी की वजह सिर्फ यही है कि सभी ने दुनिया को ही तरजीह दिया और दीन को हक़ीर जाना, आज का नाफरमान मुसलमान इस्लाम के कानून को तोड़ दिया और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमान से मुंह को मोड़ लिया, तब ही तो कुरान पढ़ने के बजाए अँग्रेजी पढ़ डाला, तब ही तो सुन्नत अपनाने के बजाए शोहरत अपना लिया । होना ये चाहिए था कि दीनी पढ़ाई को न छोड़ते और दुनियाववी पढ़ाई जरूरत के मुताबिक पढ़ते, औरतो को दुनियाववी पढ़ाई से कोई फायदा नही लेकिन नुकसान जरूर हुवा है , इस्लाम औरतों की हिफाज़त के लिए उन्हें मस्जिद आने से रोक दिया लेकिन आज जहालत के दौर में माँ बाप उस कानून को तोड़ दिया और मस्जिद तो नही भेज रहे लेकिन स्कूल और कॉलेज में भेज रहे है जो कि बेहायाई का अड्डा है। हमारे आक़ा ने फरमाया दुनिया मे सबसे बुरी जगह बाजार (जहाँ मर्द और औरत की भीड़) है। तो उस बुरी जगह से अच्छाई कहां से मिलेगी। अब भी वक़्त है अपनी पूरी कोशिश दीन ए इस्लाम के लिए लगाये ।अब अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को नाराज न करो। वरना हर दौर में नाफ़रमानो को अल्लाह अज़ाब का मजा चखाया है तो इस दौर में भी अज़ाब नाजिल है जिसको अल्लाह से डर कर सुधारना है वो सबसे पहले सुन्नत को अपना ले फिर दुनिया के मुकाबले दीन को ज्यादा तरजीह (प्राथमिकता) दीजिये अपना कीमती वक़्त मोबाइल में नही अल्लाह का ज़िक्र में लगाये।

आपका खादिम - अनवर रज़ा खान अजहरी

9534124663

निशानियां हैं अक्लमन्दों के लिये

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदायिश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अक्लमन्दों के लिये।** *(सुरह इमरान, आयत न. 190)*

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे और आसमानों और ज़मीनों की पैदायिश में ग़ौर करते हैं ऐ रब हमारे तूने यह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले।** *(सुरह इमरान, आयत न. 191)*

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **ऐ ईमान वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा।** *(सुरह माएदा, आयत न. 105)*

इस्लाम की हक़ीक़त

इस्लाम एक सीधा रास्ता है जो शैतान से बचा कर अल्लाह तक ईमान के साथ पहुचाता है। अल्लाह तआला के नज़दीक मकबूल व पसन्दीदा दीन इस्लाम ही है। जब इब्लीस अल्लाह की नाफरमानी करके और आदम अलैहिस्सलाम को सजदा न करके शैतान बना तो कसम खा कर बोला मैं सीधे रास्ते मे बैठ जाऊंगा और तेरे बंदे को गुमराह कर दूंगा और तेरा शुक्रगुजार बन्दा नही रहने दूंगा । शैतान फिर बोला मैं इंसानो को पीस डालूंगा। अल्लाह अपने बंदों को शैतान से बचाने के लिए इस्लाम मजहब को सीधा रास्ता बना दिया इस रास्ते मे चलने के लिए कुरान, अम्बिया, औलिया को इस दुनिया मे जाहिर किया। जो हमे चल के दिखा गए। सीधा रास्ता का ज़िक्र कुरान में है। **हमको सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया** (सूरह फातेहा, आयत न. 6-7)

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **तर्जुमाः बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन (सीधा रास्ता) है।** (सूरह इमरान, आयत न. 19)

तर्जुमा : **तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया** । (सुरह : माएदा, आयात 3)

तर्जमा : **इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वह हरगिज़ इससे कबूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में जियांकारों से** (सूरह इमरान, आयत न. 85)

इस्लाम को मानने वाले लोग मुसलमान कहलाते हैं। मुसलमान होने के लिए ईमान का होना शर्त है। ईमान दिल से अल्लाह व रसूल ﷺ को मानने और जिस्म से इस्लाम के मुताबिक जीने और जबान से कलमा पढ़ने का नाम ईमान है। इल्म से ईमान कामिल होता है और जिहालत से ईमान खत्म होता है।(गुनियतुतलिबीन, बाब 6 , 179)

इस्लाम को मानने वाले ३ तरह के कौम

इस्लाम को मानने वाले 3 तरह के गिरोह है 1. मोमिन/मोमिना 2. फ़ासिक 3. मुनाफ़िक़

1. मोमिन वो होता है जो इस्लाम के मुताबिक यानी अल्लाह व रसूलल्लाह के फरमान के मुताबिक ज़िन्दगी जीता है, अगर जाने अनजाने में गुनाह कर भी ले तो तौबा करके फिर गुनाह करना छोड़ देता है

2. फ़ासिक़ वो होता है जो अल्लाह रसूल की नाफरमानी करके ज़िन्दगी जीता है जैसे बिना दाढ़ी का बिना सुन्नत का वगैरह, अल्लाह फ़ासीको को तौबा करके ईमान लाने का मौका दिया है जैसे सुन्नी अवाम

3. मुनाफ़िक़ वो होता है जो इस्लाम के मुताबिक जीता है लेकिन अल्लाह के महबूब बंदों की तौहीन करता है जिसके बुनियाद पर उसका अमाल अल्लाह बर्बाद कर देता और दिल मे मोहर लगा देता है यानी उसे तौबा नसीब नही जैसे वहाबी, देवबंदी, शिया, क़ादियानी वगैरह यानी तमाम गुमराह जमात

दुनिया की हक़ीक़त

पहले ये जान लें कि ये दुनिया मोमिन के लिए आराइश (राहत) की जगह नही बल्कि आज़माइश की जगह है। ये दुनिया जंगल की तरह है और इस दुनिया मे

शैतान शेर की तरह है और इंसान भेड़िये की तरह है। जैसा कि कुरान पाक में है अल्लाह फरमाता है **"ऐ इंसान खबरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला"।** (सूरह आराफ, आयात न. 27)

फिर फ़रमाता है : **उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (धोखा) न दे दें** (सुरह माएदा, आयत न. 49)

शैतान बोला **" मैं इंसानो को पीस डालूंगा मगर थोड़ा"।(यानी सिर्फ परहेज़गारों के अलावा सबका ईमान छीन कर अज़ाब का हकदार बना देगा)** (सूरह बनी इस्राईल, आयत न. 62)

इंसानो के बारे में अल्लाह फरमाता है : आदमी कमज़ोर बनाया गया। (सूरह निसा, आयत न. 28)

दुनिया क्या चाहती है?

हज़रते जैद बिन अरकम रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हम हजरते अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर बैठे हुए थे, आप ने पानी मंगवाया तो पानी और शहद हाज़िर किया गया। आप जब उसे मुंह के करीब ले गये तो बे इख़्तियार रोने लगे, यहां तक कि पास बैठे हुए सब सहाबए किराम भी रोने लगे, कुछ देर बाद आपने फिर पीने का इरादा फ़रमाया मगर शहद और पानी देख कर दोबारा रोने लग गये यहां तक कि सहाबए किराम ने ख्याल किया कि शायद हम इस रोने की वजह दरियाफ्त नहीं कर सकेंगे। जब आपने अपने आंसू साफ़ किये तो सहाबए किराम ने अर्ज किया ऐ ख़लीफतुर्रसूल! आप के रोने का सबब क्या था? आपने फ़रमाया एक बार मुझे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमराही का शरफ नसीब हुआ, आप अपने जिस्मे मुबारक से किसी नज़र न आने वाली चीज़ को दूर फरमा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया हुजूर! आप किस चीज़ को हटा रहे हैं? आपने फ़रमाया मेरे पास अभी

दुनिया आई थी, मैं ने उसे कहा मुझ से दूर रहो, वह लौट गई है और यह कह गई है कि आप तो मुझ से बचे रहेंगे मगर आपके बाद वाले लोग नही बच सकेंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)

दुनिया क्या करती है

जनाब सुफ़यान बिन ईलिनिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कौल है जब कोई जमाअत (जलसा/मिलाद में) ज़िक्रे खुदा के लिए जमा होती है तो शैतान और दुनिया अलाहिदा (अलग) हो जाते हैं, फिर शैतान दुनिया से कहता है क्या तूने नहीं देखा यह क्या कर रहे हैं? दुनिया कहती है उन्हें छोड़ दे जूहीं यह ज़िक्रे इलाही (मजमा) से फ़ारिग होंगे तो मैं उन्हें गर्दनों को पकड़ कर तेरे हवाले करदूँगी।*(सुन्नी फजाईले आमाल, बाब ज़िक्रे इलाही)*

सबक : आपलोग दुनियादारी से बचते रहे।

दुनिया और शैतान

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह (शैतान) बड़ा फ़रेबी।** (सुरह फ़ातिर,आयत 5)

परेशानी की वजह : हकीक़त में देखा जाए तो इस दौर में दुनिया मुसलमानों को धोखा दे दी है और शैतान भी फरेब दे दिया है इसलिए मुसलमान परेशान।

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते**। (सुरह अंकबूत, आयत न. 64)

शैतान दुनिया के साथ है

हदीस : हज़रते इब्ने हब्स ने कहा: हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक शैतान दुनियां के साथ है, दौलत के साथ उसका मक्र, ख्वाहिशात के वक्त उसकी तेजी और शहवत (लालच) के वक्त उसकी कामयाबी है।*(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

ग़ौरो फिक्र : दौलत, ख्वाहिशात और लालच ही दुनिया है इसीलिए हमारे बुजुर्गाने दीन फ़क़ीरी ज़िन्दगी अपना कर इस दुनिया मे खेल कूद से बच गए।

दुनिया शैतान का जाल है

हजरत साबित रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया : जब नबीए पाक मबऊस (पैदा) हुए तो इब्लीस मलऊन ने अपने शैतानों को सहाबा के पास भेजना शुरू किया लेकिन वो इब्लीस के पास सादा कागज़ लेकर वापस आए उसने कहा क्या बात है तुम उन से कुछ फायदा ना हासिल कर सके उन्होंने कहा उनके जैसे अफराद के साथ कभी भी हमारा सामना ना हुआ इब्लीस ने कहा उनके पास ठहरे रहो हो सकता है कि दुनिया उन पर ज़ाहिर हो जाए, उस वक्त अपना काम पूरा कर सकोगे।*(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

शैतान दुनिया के जरिये गुनाह कराता है

हज़रते अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया गया तो शैतान अपने लश्कर के पास आया, उन्होंने शैतान से कहा एक नबी मबऊस हुआ है और उस के साथ उस की उम्मत (मुसलमान) भी है। शैतान ने पूछा क्या वह लोग दुनिया (दौलत, शोहरत और औरत) को पसन्द करते हैं? उन्होंने कहा हां, शैतान ने कहा कि फिर तो कोई परवाह नही, अगर वह बुतों को नही पूजते तो न पूजें, हम उन्हें तीन बातों में फंसायेंगे।

1. दूसरे की चीज ले लेना (अमानत में खयानत, जैसे चोरी, जमीन या माल में

कब्जा, नाप तौल में कमी, मजदूर का पैसा खा जाना, झूठ बोलकर तिज़ारत करना),

2. दुनियावी समान पर पैसा खर्च करा कर (यानी शैतान के राह में पैसा ख़र्च करना)

3. लोगों के हुकूक़ अदा न करना, यही तीन चीजें तमाम बुराईयों की बुनियाद है। (मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 201)

कीमती नसीहत

दुनिया से अकेला हो जा क्योंकि तू अकेला ही दुनिया में भेजा गया था। दुनिया नींद और आखिरत बेदारी है और उनका दरमियानी फासला मौत है और हम परागन्दा ख़्वाबों में हैं, जिस ने ख़्वाहिश की आँख से देखा वह तुन्द व तेज़ हो गया, जिस ने ख़्वाहिश की पैरवी की उसने जुल्म किया और जिसने लम्बी उम्मीदें रखी उसने इन्तेहा को न पाया और न ही किसी देखने वाले के लिए निहायत है। (लम्बी आर. जू की कोई इन्तेहा नहीं)*(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 71, पेज 423)*

कीमती वसीयत

किसी दाना ने एक शख़्स को वसीयत की कि मैं तुझे नफ़्सानी ख़्वाहिशों से मुकाबला करने का हुक्म देता हूं क्योंकि ख़्वाहिशें बुराईयों की कुन्जी और नेकियों की दुश्मन हैं, तेरी हर ख़्वाहिश तेरी दुश्मन है और सब से बुरी ख़्वाहिश यह है जो गुनाहों को तेरे सामने नेकी के तौर पर पेश करती है। जब यह दुश्मन तुझसे झगड़ा करेंगे तो तू उनके पंजे से, सुस्ती से मुबर्रा होशियारी, झूट से मुबर्रा सच, तसाहुल से पाक मश. गूलियत, जजअ व फ्ज़अ से पाक सब्र और ऐसी नीयत जो बेकारी से आलूदा न हो, की मौजूदगी ही में नजात पा सकेगा।*(मुकाशफतुल*

कुलूब, बाब 71, पेज 423)

आखिरत में दुनियावी जि़दगी के बारे में 5 सवाल

तिर्मिजी ने ब-सनदे सही यह हदीस रिवायत की है कि बन्दा उस वक्त तक कियामत के दिन नहीं हिलेगा जब तक कि उस से चार चीजों का सवाल नहीं हो जाएगा,

1. अपनी उम्र कैसे गुजारी,
2. अपनी जवानी किन कामों में खर्च की,
3. माल कैसे हासिल किया ।
4 माल कहां खर्च किया
5. अपने इल्म पर कितना अमल किया।

(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 68, पेज 410)

दुनियादार बंदों को अल्लाह का पैग़ाम

हजरते दाऊद अलैहिस्सलाम की तरफ अल्लाह तआला ने वही फरमाई, ऐ दाऊद मेरा यह पैगाम दुनिया वालों तक पहुंचा दो, मैं उस का दोस्त हूं जो मुझे दोस्त रखता है, अपनी मज्लिस में आने वालों का हम-मज्लिस हूं, जो मेरे जिक्र से उलफत रखता है. मैं उस से उलफ्त रखता हूं जो मुझ से दोस्ती रखता है मैं उस से दोस्ती रखता हूं, जो मुझे पसन्द करता है मैं उसे पसन्द करता हूं, जो मेरा फरमांबरदार बन जाता है मैं उस का कहना कबूल करता हूं, जो शख्स भी दिल की गहराईयों से मुझे महबूब जानता है मैं उसे अपने लिए पसन्द करता हूं और उस से बे-मिसाल मुहब्बत करता हूं, जिसने हकीकतन मुझे तलब किया उस ने मुझे पा लिया और जिस ने गैर को तलब किया वह मुझ से महरूम रहा, पस ऐ दुनिया वालो! तुम कब तक दुनिया के धोका में रहोगे, मेरी करामत,

दोस्ती और हम-मज्लिस की तरफ आओ और मुझ से उन्स रखो. मैं तुझे अपनी मुहब्बत से माला माल कर दूंगा क्यों कि मैं ने अपने दोस्तों का ख़मीर इब्राहीम खलीलुल्लाह, मूसा नजीयुल्लाह और मुहम्मद सफीयुल्लाह (अलैहिमुस्सलाम) के खमीर से बनाया है उन की रूहें अपने नूर से और निअमतें अपने जमाल से पैदा की है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 40 , पेज 266)

परेशानी की वजह दुनिया हासिल करना

फरमाने नबवी है जिस की सब से बड़ी तमन्ना दुनिया (यानी दौलत, शोहरत, औरत) हासिल करना है, अल्लाह तआला के यहां उसका कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह तआला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है। दाइमी (हमेशा) गम, दाइमी मशगूलियत, दाइमी रिज़्क में बेबरकती और कभी न पूरी होने वाली आरजूएं।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 189)

जन्नतियों की एक झलक

ज़हरुर्रियाज़ में एक हदीस है कि जब जन्नती जन्नत में दाखिल होंगे तो फ़रिश्ते उनके सामने तरह-तरह की नेअमतें पेश करेंगे, उनके लिए फर्श बिछायेंगे, मिम्बर रखे जायेंगे और उन्हें मुख़्तलिफ किस्म के खाने और फल पेश किए जायेंगे, उस वक़्त जन्नती हैरान बैठे होंगे, अल्लाह तआला फरमाएगा ऐ मेरे बन्दो! हैरान क्यों हो? यह जन्नत तअज्जुब की जगह नहीं है, उस वक़्त मोमिन अर्ज करेंगे, बारी इलाह! तूने एक वादा किया था जिस का वक़्त आ पहुंचा है, तब फ़रिश्तों को हुक्मे इलाही होगा कि इनके चेहरों से पर्दे उठा लो! फरिश्ते अर्ज करेंगे यह तेरा दीदार कैसे करेंगे हालांकि यह गुनहगार थे? उस वक्त फ़रमाने इलाही

होगा तुम हिजाब (पर्दा) उठा दो, यह ज़िक्र करने वाले, सज्दा करने वाले और मेरे खौफ से रोने वाले थे और मेरे दीदार के उम्मीदवार थे। उस वक़्त पर्दे उठा दिए जायेंगे और जन्नती अल्लाह का दीदार होते ही सज्दा में गिर जायेंगे, फ़रमाने इलाही होगा, सर उठा लो यह जन्नत दारे अमल नहीं, दारे जज़ा (बदला पाने का मक़ाम) है और वह अपने रब को बे कैफ़ देखेंगे, अल्लाह तआला फरमाएगा

मेरे बन्दो! तुम पर सलामती हो, मैं तुम से राजी हूं, क्या तुम मुझ से राजी हो ? जन्नती अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! हम कैसे राजी नहीं होंगे हालांकि तूने हमें वह ने'मतें दीं जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी दिल में उनका तसव्वुर गुज़रा और यही उस फ़रमाने इलाही का मक़सूद है कि अल्लाह उन से राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 2, पेज 46)

जहन्नम की आग कैसे बुझी

हिदायतुल हिदाया में है कि कियामत के दिन जब जहन्नम को लाया जाएगा तो उस से हैबतनाक आवाजें निकलेंगी जिस की वजह से लोग उस पर से गुज़रने में घबरायेंगे।

जब लोग जहन्नम के करीब आयेंगे तो उस से सख़्त गरमी और ख़ौफ़नाक आवाजें सुनेंगे जो पांच सौ साल के सफर की दूरी से सुनाई देती होंगी, जब हर नबी नफ्सी नफ़्सी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मती उम्मती कह रहे होंगे उस वक्त जहन्नम से एक बहुत ही बुलन्द आग बाहर निकलेगी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत की तरफ बढ़ेगी, आपकी उम्मत उस की मुदाफअत (बचाव) में कहेगी "ऐ आग! तुझे नमाजियों, सद्का देने वालों, रोज़ा दारों और खौफे खुदा रखने वालों का वास्ता, वापस चली जा!" मगर आग बराबर

बढ़ती चली जाएगी, तब हज़रते जिबरील अलैहिस्सलाम, यह कहते हुए कि जहन्नम की आग उम्मते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ बढ़ रही है, आपकी खिदमत में पानी का एक प्याला पेश करेंगे और अर्ज़ करेंगे, ऐ अल्लाह के नबी! इस से आग पर छींटे मारिए। आप आग पर पानी के छींटे मारेंगे तो वह आग फौरन बुझ जाएगी, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिबरील से उस पानी के बारे में पूछेंगे, जिबरील कहेंगे हुजूर! यह खौफे खुदा से रोने वाले आप के गुनहगार उम्मतियों के आंसू थे, मुझे हुक्म दिया गया कि मैं यह पानी आपकी खिदमत में पेश करूं और आप उस से जहन्नम की आग को बुझा दें।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ मांगा करते थे ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी आंखें अता फरमा जो तेरे खौफ से रोने वाली हों।

"ऐ मेरी दोनों आंखो! मेरे गुनाहों पर क्यों नहीं रोती हो? मेरी उम्र बरबाद होगई और मुझे मालूम भी न हुआ।" हदीस शरीफ़ में है "कोई ऐसा बन्दए मोमिन नहीं जिसकी आंखों से खौफे खुदा से मक्खी के पर के बराबर आंसू बहे और उस की गरमी उस के चेहरे पर पहुंचे और उसे कभी जहन्नम की आग छुए।" (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 2, पेज 451)

आखिरी ज़माने के मुसलमान

तुम्हारे बाद एक क़ौम आएगी जिनकी हुकूमत की बुनियाद क़त्ल और जुल्मो सितम पर होगी, जिनकी अमीरी व मालदारी बुख़्ल व तकब्बुर से भरपूर होगी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के सिवा उन्हें किसी चीज़ से मुहब्बत नहीं होगी। ख़बरदार तुम में से कोई अगर वह वक़्त पाये और मालदारी की ताक़त रखते हुए गरीबी पर राज़ी हो जाये, मुहब्बत पा सकने के बावजूद उन से दुश्मनी पर राज़ी हो जाये, और अल्लाह की रज़ा में इज्ज़त हासिल कर सकने के बावजूद तवाज़ोअ (बिना इज्जत

का) से ज़िन्दगी बसर करे तो अल्लाह तआला उसे पचास सिद्दीकों का दर्जा देगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 190)

दुनिया की बहुत जुस्तजू मत करो

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिर्स और दुनिया की बहुत जुस्तजू करने से मना फरमाते हुए इरशाद फरमाया कि ऐ लोगो! अच्छे तरीके से रोजी हासिल करो क्यो कि बन्दे को वही कुछ मिलता है जो उस की तकदीर में लिख दिया गया है और कोई इंसान अपना रिज्क खत्म किये बगैर दुनिया से नहीं जाएगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 33, पेज 217)

जवानी पर फ़ख़्र नहीं करना चाहिये

हज़रते हसन रहमतुल्लाह अलैह के करीब से एक जवान का गुज़र हुआ जो खुबसूरत कपड़े पहने हुए था आपने उसे बुला कर फ़रमाया, ऐ इन्सान! अपनी जवानी पर फखर करता है? अपनी आदतों से मुहब्बत करता है? गोया कि कब्र ने तेरे वजूद को छुपा लिया है और तू ने अपने आमाल देख लिए हैं? तुझ पर हैफ सद हैफ़! जा और अपने दिल का इलाज कर क्यों कि अल्लाह तआला को बन्दों के उम्दा दिलों की जरूरत है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 42, पेज 283)

आख़िरत को भुलाने वाली २ चिजें

फरमाने नबवी है कि मैं तुम पर दो चीजों के तसल्लुत से डरता हूँ 1. लम्बी आरजू के से (उम्मीदों) और 2. ख्वाहिशात की पैरवी, बेशक लम्बी उम्मीदें आखिरत की याद भुला देती है और ख्वाहिशात की पैरवी हक व सच्चाई से रोक देती है।(मुकाशतुल कुलूब, बाब 26, पेज 166)

कीमती नसीहत

हज़रते अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमस वालों से कहा तुम्हें शर्म नहीं आती तुम ऐसे मकानात बनाते हो जिन में तुम्हें नहीं रहना, ऐसी उम्मीदें रखते हो जिन्हें नहीं पा सकते और ऐसा सामान इकट्ठा करते हो जिसे अपने मसरफ (काम) में नहीं लाते। तुम से पहली उम्मतों ने आलीशान इमारतें बनवाई, बहुत माल व दौलत जमा किया और बहुत लम्बी उम्मीदे रखी मगर उन की उम्मीदें फरेब निकलीं और उन का जमा किया हुआ माल बरबाद और उन की इमारतें कब्रे बन गई। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 26, पेज 166)

आख़िरत का तलबगारों के लिए

हज़रते अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हजरते उमर रजियल्लाहु अन्हु से कहा अगर तुम अपने दोस्त से मुलाकात की तमन्ना रखते हो तो पैवन्द लगा कपड़ा पहनो, पुराना जूता इस्तेमाल करो, उम्मीदें कम करो और पेट भर कर न खाओ। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 26, पेज 166)

आख़िरत के लिए दुनिया छोड़ो

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से फरमाया क्या तुम सब जन्नत में जाने की तमन्ना रखते हो? उन्होंने अर्ज की हाँ, आपने फ़रमाया उम्मीदें कम करो और अल्लाह तआला से कमा हक्कुहू शर्म करो। सहाबए किराम ने अर्ज की या रसूलल्लाह! हम अल्लाह से शर्म करते हैं। आपने फरमाया हया वह नहीं जो तुम समझते हो, हया यह है कि तुम कब्रों और उनकी तकलीफों को याद करो, पेट को हराम से महफूज ररखो, दिमाग को बुरे ख़्यालों की आमाजगाह न बनाओ और

जो शख्स आखिरत की इज्ज़त चाहता है वह दुनियावी जीनतों को तर्क कर दे, यही हकीकी शर्म है और इसी से बन्दा अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल करता है।(मुकाशतुल कुलूब, बाब 26, पेज 167)

यह दुनिया पखानागाह की तरह है

मरवी है कि जब हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने ममनूआ शजर (फल) खा लिया तो उन्हें पेट में गिरानी महसूस हुई हालांकि जन्नत की निअमतों में यह बात नहीं है। हज़रते आदम अलैहिस्सलाम कज़ाए हाजत (पाखाना) के लिए चारों तरफ हैरान फिर रहे थे कि अल्लाह तआला के हुक्म से रिश्ता हाजिर हुआ और कहने लगा आदम! हैरान क्यों फिर रहे हो? आपने फरमाया मैं अपने पेट की गिरानी खत्म (पखाना) करना चाहता हूं। फरिश्तों ने बोला इस गिरानी को कहां डालोगे? जन्नत के फर्श पर, तख्तों पर, दरख्तों के साये में, जन्नत की नहरों के किनारों पर? जन्नत में इन चीज़ों की कोई जगह नहीं है, आप दुनिया में चले जायें। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 31, पेज 191)

कीमती नसीहत

हज़रते अबू दरदा रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया ऐ लोगो! जो कुछ मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो आबादी छोड़ कर वीरान टीलों की तरफ निकल जाते और अपने को रियाजत में मशगूल करते, गिरया व जारी करते और ज़रूरी सामान के इलावा तमाम माल व दौलत छोड़ देते लेकिन दुनिया तुम्हारे आमाल की मालिक बन गई है और दुनिया की उम्मीदों ने तुम्हारे दिल से आख़िरत की याद मिटा कर रख दी है और तुम (उस के लिए) जाहिलों की तरह सर-गरदों हो, तुम में से बाज लोग जानवरों से भी ज्यादा बुरे हैं जो अपनी ख़्वाहिशात में अंधे बनकर

अंजाम की फिक्र नहीं करते, तुम सब दीनी भाई होते हुए एक दूसरे से मुहब्बत नहीं करते हो और न ही एक दूसरे को नसीहत करते हो तुम्हारे खबसे बातिन ने तुम्हारे रास्ते जुदा कर दिए हैं, अगर तुम सीधे रास्ते पर चलते तो ज़रूर आपस में मुहब्बत करते, तुम दुनियावी उमूर में तो आपस में मशवरे करते हो मगर आखिरत के उमूर में मशवरा नहीं करते और तुम उस जात से मुहब्बत नहीं रखते जो तुम्हें महबूब रखता है और तुम्हें आखिरत की भलाई की तरफ ले जाना चाहता है। यह सब इस लिए है कि तुम्हारे दिलों में ईमान कमजोर पड़ चुका है। अगर तुम आख़रित की भलाई और बुराई पर यकीन रखते जैसे दुनियावी ऊँच नीच पर यकीन रखते हो तो तुम दुनिया पर आखिरत को तरजीह देते क्यों कि आखिरत तुम्हारे आमाल की मालिक है। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 31, पेज 195)

दुनिया एक गहरा समुंदर है

हज़रते लुकमान अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को वसीयत की कि यह दुनिया बहुत गहरा समुन्दर है, इस में बहुत लोग डूब गये हैं। इससे गुज़रने के लिए ख़ौफे खुदा की कश्ती बना, जिस में भराव ईमाने खुदावन्दी का हो और उसे तवक्कुल के रास्तों पर चला ताकि नजात पा जाये वरना नजात की कोई सूरत नहीं। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 31, पेज 197)

बेनमाजी बदकार औरत से भी बदतर

जानबूझ कर नमाज़ तर्क करने वाला ज़ानी से भी बदतर है नीज़ यह भी मरवी है कि बनी इसराईल की एक औरत हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की खिदमत में आई और अर्ज़ किया ऐ नबीयुल्लाह! मैंने बहुत बड़ा गुनाह

किया है और तौबा भी की है, अल्लाह तआला से दुआ माँगिये कि वह मेरे गुनाह को बख़्श दे और मेरी तौबा कबूल फरमा ले। हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा तूने कौन सा गुनाह किया है? वह कहने लगी कि मैं जिना की मुरतकिब हुई और जो बच्चा पैदा हुआ मैं ने उसे कत्ल कर दिया है। यह सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम बोले, ऐ बद-बख़्त निकल जा! कहीं तेरी नुहूसत की वजह से आसमान से आग नाजिल होकर हमें न जलादे।

चुनान्चे वह शिकस्ता दिल होकर वहाँ से चल पड़ी, तब जिबरील अलैहिस्सलाम आये और कहा ऐ मूसा! (अलैहिस्सलाम) अल्लाह तआला फरमाता है कि तूने गुनाह से तौबा करने वाली को क्यों वापस कर दिया है? क्या तूने उससे भी ज्यादा बुरा आदमी नहीं पाया? मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ऐ जिबरील! उस औरत से ज्यादा बुरा कौन है? जिबरील अलैहिस्सलाम बोले कि उससे बुरा वह है जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दे। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 49, पेज 329)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शादी में दुनिया से दूर रहने वालों को दावत

एक मर्तबा हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम सख़्त बारिश में घिर गये, आपको पनाह तलाश करते हुए एक खेमा नजर आया। जब क़रीब पहुँचे तो देखा कि उस में एक औरत बैठी हुई है। वापस लौटे तो पहाड़ का एक गार नजर आया। वहाँ जाकर देखा तो एक शेर खड़ा था, आपने उस पर हाथ रखा और अर्ज की ऐ रब्बे. जुलजलाल! तूने हर चीज का ठिकाना बनाया है मगर मेरा कोई ठिकाना नहीं है। रब तआला ने फ़रमाया तेरा ठिकाना मेरी रहमत है। मैं कियामत के दिन अपने दस्ते. कुदरत से पैदा की हुई सौ हूरों से तेरा अक्द करूँगा और तेरी दावते वलीमा चार हजार

साल जारी रहेगी, हर साल के दिन दुनिया की ज़िन्दगी के बराबर होंगे और आवाज़ देने वाला मेरे हुक्म से आवाज देगा, ऐ दुनिया से अलग-थलग रहने वालो! आओ जाहिदे आज़म ईसा बिन मरियम (अलैहिस्सलाम) की शादी देखो। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 32)

लालच का अंजाम (न जान बची, न ईमान)

एक इबरत- अंगेज़ वाकआ

जरीर ने लैस से रिवायत की है कि एक शख़्स हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम की सोहबत में आया और कहने लगा मैं आपकी सोहबत में हमेशा आपके साथ रहूंगा, लिहाज़ा हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम और वह आदमी इकट्ठे रवाना हो गये। जब एक नदी के किनारे पहुंचे तो खाना खाने के लिए बैठ गये, उनके पास तीन रोटियां थीं, जब दो रोटियां खा चुके और एक रोटी बाकी रह गई तो हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम नदी पर पानी पीने तशरीफ ले गये, जब आप पानी पीकर वापस तशरीफ लाये तो रोटी मौजूद नहीं थी, आपने पूछा रोटी किसने ली है? वह आदमी बोला कि मुझे मालूम नहीं।

रावी कहते हैं कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम उसे लेकर आगे चल पड़े और आप ने हिरनी को देखा जो दो बच्चे साथ लिए जा रही थी। आपने उसके एक बच्चे को बुलाया, जब वह आया तो आप ने उसे जबह किया और गोश्त भून कर खुद भी खाया और उस शख़्स को भी खिलाया, फिर बच्चे से फ़रमाया अल्लाह के हुक्म से खड़ा होजा। चुनान्चे हिरनी का बच्चा खड़ा हो गया और जंगल की तरफ चल दिया, तब आप ने उस आदमी से कहा मैं तुझ से उस जात के नाम पर सवाल करता हूं जिसने तुझे यह मोअजिज़ा दिखलाया, रोटी किस ने ली थी? यह आदमी बोला मुझे मालूम नहीं।

फिर आप एक झील पर पहुंचे और उस शख्स का हाथ पकड़ा और दोनों पानी के ऊपर चल पड़े, जब पानी पार कर लिया तो आप ने उस शख्स से पूछा तुझे उस जात की कसम जिसने तुझे यह मोअजिजा दिखाया, बता वह रोटी किस ने ली थी? उस आदमी ने फिर जवाब दिया कि मुझे मालूम नहीं।

फिर आप रवाना हो गए और एक जंगल में पहुंचे, जब दोनों बैठ गये तो हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने मिट्टी और रेत की ढेरी बनाकर फ़रमाया कि अल्लाह के हुक्म से सोना होजा, चुनान्चे वह सोना बन गई और आपने उसकी एक जैसी तीन ढेरियां बनाई और फरमाया तिहाई मेरी, तिहाई तेरी और तिहाई उस शख्स की है जिसने वह रोटी ली थी, तब वह आदमी बोला वह रोटी मैंने ली थी, आप ने उस से फ़रमाया यह सोना तमाम का तमाम तेरा है और उसे वहीं छोड़ कर आप आगे रवाना हो गये।

उस शख्स के पास दो आदमी आ गये, उन्होंने जब जंगल में एक आदमी को इतने माल व दौलत के साथ देखा तो उनकी नीयत बदल गई और उन्होंने इरादा किया कि इसे कत्ल करके माल समेट लें। उस आदमी ने जब उनकी नीयत भांप ली तो खुद ही बोल उठा कि यह माल हम तीनों ही आपस में बराबर-बराबर तकसीम कर लेते हैं, फिर उन्होंने अपने में से एक शख्स को शहर की तरफ रवाना किया ताकि वह खाना खरीद लाये।

जिस शख्स को उन्होंने शहर की तरफ खाना लाने के लिए भेजा था, उसके दिल में ख्याल आया कि मैं इस माल में उनको हिस्सेदार क्यों बनने दूं? मैं खाने में जहर मिलाए देता हूं ताकि वह दोनों ही हलाक हो जायें और माल अकेला मैं ही ले लूं. चुनान्चे उसने ऐसा ही किया।

रावी कहते हैं कि उधर जो दो आदमी जंगल में बैठे हुए थे, उन्होंने इरादा कर लिया कि हम उसे एक तिहाई क्यों दें? जैसे ही वह आये हम उसे कत्ल करें और दौलत हम दोनों आपस में तकसीम करलें, चुनान्चे जब यह आदमी खाना लेकर आया तो उन्होंने उसे कत्ल कर दिया और बाद में वह खाना खाया जिसे खाते ही वह दोनों भी मर गये और सोने की ढेरियां उसी तरह पड़ी रहीं और जंगल में तीन लाशें रह गई। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का फिर वहां से गुज़र हुआ और उनकी यह हालत देख कर अपने साथियों से फ़रमाया देखो यह दुनिया है, इससे बचते रहना। (मुकाशतुल कुलूब, बाब 59, पेज 377)



Next Part-3 .....